

अगात्मजा स्त्री. (तत्.) अग अर्थात् पर्वत की पुत्री, शैलसुता, पार्वती।

अगाध वि. (तत्.) शा.अर्थ. जो गाध अथवा उथला न हो 1. अत्यंत गहरा जैसे अगाध समुद्र 2. अथाह 3. अतल 4. अपार 5. दुर्बोध।

अगाह वि. (तद्.) दे. अगाध।

अगिन स्त्री. (तद्.) 1. दे. अग्नि 2. अगणित, अनगिनत, असंख्य, बेशुमार 3. झाड़ियों में विचरण करने वाली लाल रंग की एक चिड़िया lark

अगिनत वि. (तत्.) दे. अनगिनत।

अगिया स्त्री. (तद्.) एक प्रकार की घास, खर पुं (तद्.) 1. एक प्रकार का पीला रोएँदार कीड़ा 2. घोड़े या बैलों का एक रोग।

अगियाना अ.क्रि. (तद्.) जल उठना, जलना, गरमाना, बहुत अधिक क्रोध में आना।

अगिया बैताल पुं. (हि.+तत्.) विध्वंस के कार्यों में आगे रहने वाला व्यक्ति टि. राजा विक्रमादित्य के दो बैतालों में से एक बैताल का नाम 'अगिया बैताल था, जिसके मुँह से आग निकलती थी और जो अद्भुत रूप से विध्वंस के कार्यों में अग्रसर रहता था।

अगियार वि. (तद्.) जिसकी आग देर तक जल सके, पुं (तद्.) वह वस्तु जो वातावरण को सुगंधित करने के लिए आग में डाली जाती है, धूप, हवन-सामग्री आदि।

अगियारी स्त्री. (तद्.) वह वस्तु जो वातावरण को सुगंधित करने के लिए आग में डाली जाती है।

अगुआ पुं. (तद्.) 1. आगे चलने वाला व्यक्ति, अग्रणी, अगुवा 2. मुखिया, प्रधान, नायक, सरदार, नेता 3. मार्ग-दर्शक, पथ-प्रदर्शक विलो. पिछुआ।

अगुआई स्त्री. (तद्.) 1. अग्रणी होने की स्थिति, अग्रसरता 2. नेतृत्व, प्रधानता, सरदारी 3. मार्ग-दर्शन।

अगुआना स.क्रि. (तद्.) आगे करना, अगुआ बनाना
अ.क्रि. (तद्.) आगे होना, बढ़ना।

अगुण वि. (तत्.) 1. गुणरहित, निर्गुण, सत्वगुणविहीन 2. मूर्ख, अनाड़ी पुं. अवगुण, दोष, दूषण।

अगुणज्ञ वि. (तत्.) जो गुण को जानने वाला न हो, अगुणी।

अगुणता स्त्री. (तत्.) गुणहीनता, गुणों का अभाव।

अगुणवादी वि. (तत्.) दूसरों के दोष या अवगुण खोजने वाला।

अगुणित वि. (तत्.) 1. जो गुणित न हो, जिसमें एकाधिक संख्याएँ न हो 2. जीव. (वह जीव या कोशिका) जिसमें गुणसूत्रों का एक ही समुच्चय (सेट) हो तु. द्विगुणित, बहुगुणित।

अगुणी वि. (तत्.) 1. निर्गुणी, गुणरहित, गुणहीन 2. अनाड़ी, मूर्ख।

अगुन वि./पुं. (तद्.) दे. अगुण।

अगुनी वि. (तद्.) दे. अगुणी।

अगुरु वि. (तत्.) 1. जो भारी न हो, हलका 2. जिसका कोई गुरु न हो, गुरुविहीन, निगुरा 3. जिसने गुरु से उपदेश न प्राप्त किया हो 4. जो गुरु न हो, गुरु से भिन्न पुं. 1. शीशम का पेड़।

अगुवा पुं. (तद्.) दे. अगुआ।

अगुवाई स्त्री. (तद्.) दे. अगुआई।

अगुवा करना स.क्रि. (तद्.) अगुवा करना, अनैतिक ढंग से धन प्राप्त करने के लिए किसी व्यक्ति का (विशेष रूप से धनवान व्यक्ति या उसके बालक का) असामाजिक तत्वों द्वारा अपहरण करना ताकि (उसे छोड़ने की एवज में) उसके अभिभावकों से धन उगाहा जा सके।

अगूढ वि. (तत्.) 1. जो समझने में कठिन न हो, जिसका अर्थ छिपा न हो, स्पष्ट, आसान 2. जो छिपा न हो, प्रकट।

अगूढभाव वि. (तत्.) स्पष्ट अर्थवाला (वाक्य/वाक्यांश)।

अगूढव्यंग्य पुं. (तत्.) काव्य. गुणीभूतव्यंग्य का वह भेद जहाँ व्यंग्यार्थ-वाच्यार्थ की तरह स्पष्ट रहता है और सरलता से बोधगम्य होता है।